कानून के स्रोत (Sources of Laws)

कानून के स्रोत से तात्पर्य उन साधनों से है जो प्रत्यक्ष रूप से कानून के निर्माण में सहायता देते है। जैसा कि हम जानते है, सामान्यतः विधानमण्डल द्वारा कानून का निर्माण किया जाता है, किन्तु इसके अतिरिक्त भी कानून के अनेक स्रोत है।

(i) प्रथाएं या रीति-रिवाज या परम्पराएं (customs) — प्रत्येक समाज में कानून का प्राचीनतम रूप लोगों की सुस्थापित प्रथाओं में ढूंढा जा सकता है। ये प्रथाएं अनेक होने पर अपनी निहित उपयोगिता के कारण अदृश्य रूप में परन्तु क्रमशः विकसित होती गई। समय आने पर ऐसी मान्यता व्यवहार का विषय बन गई और पर्याप्त समय तक प्रचलित रहने के कारण रीति-रिवाज के कठोर रूप में परिवर्तित हो गई। पुनः जब ये समाज में अधिक मान्य तथा प्रचलित हो जाते है, तब राज्य उन्हें कानून का रूप दे देता है। इस प्रकार समाज के प्रचलित रीति-रिवाज कानून का रूप धारण कर लेते है और उन्हें प्रथागत कानून कहा जाने लगता है। रोम में 'ट्वेल्व टेबुल्स' (Twelve-Tables), भारत में 'स्मृतियां' तथा इंगलैण्ड में 'कामन लॉ' इसी स्रोत की देन है। मैकाइवर के शब्दों में — 'कानून के विशाल ग्रन्थ में राज्य केवल कुछ ही नये वाक्य लिखता है और कहीं कहीं एक आधा पुराना वाक्य काट देता है। इस ग्रन्थ की अधिकांश भागों की रचना में राज्य का कभी कोई हाथ नहीं रहा है, परन्तु राज्य स्वयं इस सम्पूर्ण ग्रन्थ से मर्यादित होता है।

(ii) धर्म (Religion) — कानून के विकास में परम्परा की भाँति धर्म का भी महत्वपूर्ण स्थान रहा है। अनादि काल से लोगों ने कुछ अति-प्राकृतिक शक्तियों पर विश्वास किया है जिनके माध्यम से उनके व्यवहार को इस रूप में विनियमित करने का प्रयास किया गया है कि वे अपने देवी-देवताओं का सम्मान करें। परिणामतः, पवित्र पुस्तकों में समाहित शब्दों तथा पुजारियों, अलौकिक पुरुषों द्वारा की गई उनकी व्याख्याओं से

Avinash

लोगों के धार्मिक कानून का गठन होता है। समय की गति के साथ धार्मिक कानून के अधिकांश सिद्धांत राज्य द्वारा निश्चित नियमों में परिवर्तित कर दिए गए। विल्सन ने ठीक ही कहा है कि रोम का प्रारम्भिक कानून शास्त्रगत धार्मिक नियमों के एक संग्रह अथवा कतिपय धार्मिक सिद्धान्तों के उचित पालन द्वारा धार्मिक अधिकार प्राप्त करने के साधनों की एक व्यवस्था के अतिरिक्त और कुछ नहीं था।

(iii) न्यायिक निर्णय (Judicial Decisions) - सभ्यता के विकास के कारण ज्यों-ज्यों सामाजिक व्यवस्था की प्रक्रिया अधिकाधिक जटिल होती गई, प्रथा का बल क्षीण होने लगा। प्रथा के अर्थ व उसकी प्रकृति को लेकर समाज के सर्वाधिक बुद्धिमान लोग विवादों का निर्णय करते थे। ये निर्णय भविष्य में मार्ग निर्देशन के प्रमाण बन गए। यद्यपि वे परम्परा पर आधारित थे, बाद में उन्हें लोगों की प्रथाओं के व्याख्याकारों तथा उन्हें लागू करने वालों ने लेखनीबद्ध कर दिया। क्योंकि निर्णायकों को 'समाज के सर्वाधिक बुद्धिमान लोग' माना गया, अतः उनके निर्णयों के साथ एक विशेष मान्यता जुड़ गई और क्योंकि ये निर्णय लिखित रूप में दिए जाते थे, अतः उन्होंने उस कानून का निर्माण किया जिसे अदालती कानून के रूप में स्वीकार किया गया।

आज भी न्यायिक निर्णय कानून के विकास में पर्याप्त सहायक होते हैं। न्यायाधीश विधि की व्याख्या करते समय जाने-अनजाने में नये कानून के निर्माण का कार्य करते हैं। जस्टिस होल्मस के विचार में, न्यायाधीश कानून बनाते हैं और उनको इसका अधिकार भी है।

(iv) साम्या (Equity) - ज्यों-ज्यों समय बीतता है और जीवन की नई परिस्थितियां विकसित होती हैं, राज्य का कानून नई स्थितियों में अनुपयुक्त अथवा अपर्याप्त होता जाता है। इसे उपयुक्त बनाने के लिए या तो पुराने कानून को बदला जाए या उसे किसी औपचारिक विधि द्वारा अनुकूल बनाया जाए। अतः इस अन्तराल को भरने के लिए साम्या का आश्रय लिया जाता है। राज्य के कानून के अभाव में न्यायाधीश

Scanned with CamScanner

निष्पक्षता, उपयुक्तता, सामान्य बुद्धि तथा प्राकृतिक न्याय के सामान्य सिद्धांतों के आधार पर विवादों का निर्णय करते हैं। इस प्रकार, जब शासक के पूर्व कुछ निश्चित शब्दों को परिवर्तित कर दिए जाते हैं, तो वे कानून के रिक्त भागों की पूर्ति करते हैं।

(v) विधायन (Legislation) – कानून की उत्पत्ति का सबसे बड़ा स्रोत विधायन है। इसका अर्थ है किसी विशेष नियम को देश की कानून संहिता में रख देना, चाहे यह राष्ट्राध्यक्ष द्वारा अधिघोषित अध्यादेश हो, अथवा विधायिका द्वारा पारित होने के उपरांत राज्याध्यक्ष की सहमति प्राप्त किसी आदेश के रूप में हो, इसमें देश के कानून की वैधता होती है।

(vi) मानक ग्रंथ या कानूनी टीकाएं (Standard Works or Commentaries) - कानून का स्रोत इन वैज्ञानिक टीकाओं में भी खोजा जा सकता है जिनमें अग्रगण्य विचारक, न्यायविद तथा राजमर्मज्ञ कानून के महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपने मतों की अभिव्यक्ति करते हैं। पुनः न्यायालयों में न्यायाधीश इन टीकाओं को मान्यता देते हैं तथा अपने निर्णयों में इनका आदर के साथ उल्लेख करते हैं। इस प्रकार कानून की ये शास्त्रीय टीकाएं कानून के विकास में सहायक होती हैं।

वुडरो विल्सन के शब्दों में, रीति-रिवाज विधि का सर्वप्रथम स्रोत है पर धर्म भी उसी का समकालीन, उतना ही सबल और राष्ट्र के विकास में लगभग वैसा ही स्रोत है। न्यायिक निर्णय अधिकारी बनकर आया और औचित्य के साथ कदम मिलाकर चला। केवल व्यवस्थापन जो कानून का विचारपूर्ण और चेतन संगठन है और वैज्ञानिक व्याख्या जो कानून के नियमों का विकास है, राजनीतिक समाज में उन्नत पद पर पहुंचने की प्रतीक्षा में है, ताकि वह विधि निर्माण में प्रबल प्रभाव डाल सके। अतः यह कहा जा सकता है, कानून के प्रारंभिक स्रोतों का महत्व यद्यपि कम हो गया है, किन्तु आज भी वे व्यवस्थापन की अति पर अंकुश रखने का कार्य करते हैं।

[signature]

Scanned with CamScanner